।। सूत के अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
✻

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सूत के अंग का अनुवाद प्रारम्भ ||

|| कवित्त ||

सूतां खंचे नीव || सूत पर म्हेल चुणीजे ||
सूताँ पथर कोर || जाय देवळ पर दिजे ||
सूत्ताँ करे बोपार || सूत सूं राज कमावे ||
सूताँ परणे आय || मान सोभा ब्हो पावे ||
सूत बिना सेंसार मे || बात न माने कोय ||
जन सुखिया हर भक्त रे || सूत बिना न होय || १ ||

जैसे सभी कार्य सूत से सोच समझसे करने से अच्छा होता है कोई भी कार्य सूत याने सोच समज के बिना करने नही होता । ऐसे ही भक्ति सूत याने सोच समज किए बिना नही होती है । मकान की नीव सूत से याने सोच समज से खोदकर उसके उपर महल सूत से याने सोच समज के बनाओगे तभी बनेगा । पत्थर सूत से याने सोच समज से ही घिस कर देवल को लगाओगे (तभी वह देवल पर बैठेगा । सूत याने सोच समज से के बिना कुछ भी नही होता है । सूत से याने सोच समज से ही व्यापार चलता है । सुत से याने सोच समज से ही राज्य कमाया जाता है । सूत से याने सोच समज से ही शादी करने पर उसमे मान और शोभा बहुत मिलता है । सूत के याने सोच समज से बिना संसार मे कोई भी कोई बात नही मानता है । उसी तरह सूत याने सोच समजके बिना भक्ति भी नही होती है । || १ ||

सूताँ चाले नीर || सूत सीर कूवा बेहे ||
सूताँ रथ घड़ लेह || देस प्रदेसा जेहे ||
सूताँ चाले ज्हाज || माण भे पार लंघावे ||
सूताँ मिलीये राय || सूत सूं सब कुछ पावे ||
सूताँ बिन अड़ जाय || पार पूंछे नही कोई ||
जन सुखिया हर भक्त || सूत बीन कैसे होई || २ ||

पानी मे(जहाज चलाना हो तो)सूत से याने सोच समज से ही चलाने पर चलेगा । कुँए से पानी निकालना हो तो सुत से याने सोच समज से ही निकालना चाहिये । और सूत से याने सोच समज से हि घडी हुआ रथ याने गाडी देश परदेश को जाती है । सूत से याने सोच समज से बनाया हुआ जहाज पानी मे चलता है । वह जहाज मनुष्यो को और व्यापारीयों का पार लगाता है । राज्य का मिलाप सूतसे याने सोच समज से करने से होता है । सूत के याने सोच समज से बिना नही होता है । सूत से याने सोच समज से सब कुछ मिलता है । सूत के याने सोच समज से बिना करने से सभी जगह अड जाता है । सूत के याने सोच समज से बिना कोई भी पार नही पहुँचता है । वैसे ही भक्ति भी सूत

के याने सोच समज से बिना करने से कैसे होगी?।।२।।

सूतां होय संजोग ।। सूत प्रसादी पावे ।।
सूता ताणो मांड ।। सूत पर नाळ चलावे ।।
सूताँ बिणीये पट ।। सूत सूं कागद माने ।।
सूताँ कर दे न्याव ।। भ्रम दुबध्या सब भाने ।।
सूताँ बीन सब काम करे ।। आछो लगे न कोय ।।
जन सुखिया हर भक्त रे ।। सूत बिना न होय ।। ३ ।।

सूत से याने सोच समज से ही संयोग होता है,सूत से याने सोच समज से ही प्रसाद मिलता है । सूत से याने सोच समज से ही निशान मारा जाता है । सूत से याने सोच समज से ही नाल चलायी जाती है । सूत से याने सोच समज से ही कपडा बुना जाता है । सूत से याने सोच समज से किया गया न्याय सही होता है । सूत से याने सोच समज से भ्रम और दुविधा मिटती है । सूत के याने सोच समज से बिना कोई भी काम अच्छा नही होता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि इसी तरह हर भक्ति भी सूत से याने सोच समज से किए बिना नही होती है । ।। ३ ।।

सूत कहे सब कोय ।। भेद जु क्हा कुवावे ।।
किस बिध दीजे जाय ।। सूत केसी बिध आवे ।।
ज्ञान ध्यान बमेक ।। बुध ममता सुध होई ।।
हिये तराजु तोल ।। बेण मुख काढे सोई ।।
सतगुरू से अधिन रे ।। बोले बेण बिचार ।।
भक्त सूत सुखरामजी ।। लिव लागत ईन लार ।। ४ ।।

सभी लोग सूत सूत कहते है वह सूत याने समझ किस विधीसे आती है । एवम् ज्ञान,ध्यान, विवेक,बुध्दि,ममता,शुध्दि किस विधी से है प्राप्त होती है यह कोई भी नही जानते है । सतगुरू के साथ,सतगुरू के आधीन होकर रहना चाहिये व सतगुरू से तराजू मे तोलकर वचन विचार करके बोलना चाहिये इस विधीसे भक्ति की सोच समज आती है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा सोच समज के भक्ति करनेसे उसी समय लव लिग जाती ।।४।।

।। इति सूत को अंग संपूरण ।।